सीखने–सिखाने के लिए जरूरी है कई विकल्पों का होना

इंदु पंवार
प्रधानाध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय गिरगांव
पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सहायक अध्यापिका – मंजू रावत
भोजन माता – रजनी देवी
नामांकन – 17

श्रीनगर गढ़वाल से 14 किमी दूर स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय गिरगांव अपनी शैक्षिक गतिविधियों के कारण अलग पहचान बनाये हुए है। गाँव के बीच में बने इस स्कूल में प्रवेश करते ही वहां की सजीव दीवारें आपका मन सहज ही अपनी ओर खींच लेती हैं। यहाँ दीवारों का प्रयोग बेहतर शिक्षण सामग्री के रूप में होता है। स्कूल जाने पर स्वभाव से मिलनसार यहाँ की प्रधानाध्यापिका इंदु जी स्निग्ध मुस्कान के साथ स्वागत करती हैं।

इंदु पंवार नयी–नयी शिक्षण गतिविधियों को स्वयं सीखने के लिए उत्सुक रहती हैं और उन्हें बच्चों के साथ साझा करने के लिए प्रयासरत रहती हैं। वे बातचीत में बताती हैं कि बचपन से पढने–लिखने का शौक था पढ़ने–लिखने का वातावरण घर से ही मिला।

उन्होंने अपने अध्यापन की शुरुआत 1997 में पौड़ी जनपद के कोट ब्लॉक के राजकीय प्राथमिक विद्यालय वीरसनी से की। संयोग से उस विद्यालय के प्रधानाध्यापक उनके प्राथमिक के अध्यापक रहे थे अर्थात गुरु और शिष्या एक ही विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे थे। वहां से कुछ और विद्यालयों में अध्यापन के पश्चात् 2010 में वे गिरगांव स्थानांतरित होकर आयीं। तब से अब तक ये स्कूल इनकी कर्मस्थली बना हुआ है।

गिरगांव स्कूल में अपने शुरूआती दिनों को याद करते हुए इंदु जी कहती हैं कि जब मैं स्कूल में आई तो विद्यालय व्यवस्थित नहीं था। कुछ पुरानी किताबें थीं, शौचालय की व्यवस्था नहीं थी। धीरे–धीरे विद्यालय के साथी अध्यापिका के साथ मिलकर चीजों को व्यवस्थित करने का कार्य शुरू किया। पुस्तकालय की स्थापना की और बच्चों को इसके इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया। आज विद्यालय में तीन शौचालय हैं। अभिभावकों को भी बच्चों की स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का कार्य शुरू किया।

विद्यालय जाने पर बाल साहित्य की आकर्षक किताबें अलमारी के बाहर मेज पर रखी दिख जाती हैं। बच्चे अपनी रुचि के अनुसार उन्हें पढ़ते रहते हैं। बच्चों का भाषा एवं अभिव्यक्ति का बेहतरीन कौशल इस बात की पुष्टि करता है कि विद्यालय में पाठयक्रम से इत्र पढ़ने–लिखने के अवसर बच्चों को उपलब्ध करवाये जाते हैं। बच्चे पूरे आत्मविश्वास के साथ कहानियां सुनाने में निपुण होने के साथ उनकी विवेचना करने में सक्षम हैं। बच्चों में भाषाई कौशल की दक्षता के लिए अपनाए जा रहे प्रयासों की बाबत वे बताती हैं कि–"यदि बच्चों को पढ़ने और अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये जायें तो उनकी भाषाई दक्षता बढ़ जाती है। बिना रोक–टोक के बच्चों को पढ़ने के लिए किताबों से दोस्ती करने के खूब मौके देती हूँ। इस बात का भी ध्यान रखती हूँ कि वे क्या पढ़ रहे हैं और पढ़े को कितना समझ रहे हैं। इसके लिए उनके साथ खुद भी पढ़ती हूँ और उनसे पढ़ी हुई कहानी को सुनती भी हूँ। बच्चे कहानी सुना सकें इसके लिए बच्चों में आत्मविश्वास पैदा करना बहुत जरूरी है। शुरूआती कक्षाओं में पढ़ने वाले छोटे बच्चे भी चित्रों को देखकर कहानी को खूबसूरत तरीके से सुनाते हैं"। यहाँ बच्चे केवल हिंदी ही नहीं अंग्रेजी विषय को भी चाव के साथ पढ़ते हैं।

इंदु जी समाज को स्कूल का एक अहम् हिस्सा समझती हैं। उनका मानना है कि ये दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। समुदाय का सक्रिय सहयोग और समर्थन विद्यालय के लिए वे महत्वपूर्ण मानती हैं। वह नियमित अन्तराल पर विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक का आयोजन कराती हैं। विद्यालय में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में गाँव के लोगों का सक्रिय प्रतिभाग होता है। वे अपनी साथी अध्यापिका के साथ मिलकर गांव का नियमित रूप से भ्रमण कर अभिभावकों से भी संपर्क और संवाद कायम करने का प्रयास करती हैं। इंदु जी ने अपनी बातचीत में यह भी बताया कि जब कोई बच्चा विद्यालय नहीं आता तो वे इसका कारण पता करती हैं और कई बार घर भी जाती हैं।

कब आपको शिक्षिका होने पर अधिक गर्व महसूस हुआ? ये प्रश्न पूछने पर उनकी मुस्कान हंसी में तब्दील हो गयी। कहने लगीं हर दिन बच्चों के साथ रहते हुए एक नयी सुखानुभूति होती है। फिर कुछ क्षण चुप रहकर कहा कि एक स्नेहिल क्षण जो मुझे शिक्षिका होने पर ही मिल सकता था, विद्यालय प्रबंधन समिति के साथ की एक घटना का है जब मैंने अपनी शादी की वर्षगांठ पर बच्चों के अभिभावकों को दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया। जब सब लोग वापस घर जाने लगे तो एक महिला ने मेरे हाथ में कुछ पैसे रखकर मेरी मुट्ठी बंद कर दी। बहुत स्नेह के साथ कहा "मैडम जी मना मत करना और मेरी हथेली में कभी न भूलने वाला उपहार दे गयीं। मेरी मुट्ठी में बंद उन तीस रूपयों में उस महिला का प्रेम और सम्मान उमड़ा हुआ था। इस बात को कहते हुए इंदु जी भावुक हो गयीं। इस एक वाकये से ही उनके गाँव वालों से संबंधों की प्रगाढ़ता को समझा जा सकता है। शिक्षा एवं शिक्षक के प्रति उनकी सोच बहुत सकारात्मक है। वे कहती हैं शिक्षा और शिक्षक को नयी सकारात्मक परिवर्तनशीलता को स्वीकार करना चाहिए। शिक्षा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है इसके लिए मात्र स्कूल ही पर्याप्त नहीं बच्चे अपने दैनिक जीवन की हर सामान्य घटना से कुछ सीखते हैं। बच्चों को अभिव्यक्ति के भरपूर मौके मिलने चाहिए जिससे वह अपने आसपास की जानकारियों को अपने अनुभव का हिस्सा बना सकें। यही बात अध्यापकों पर भी लागू होती है। इंदु जी अपनी बात पर जोर देते हुए कहती हैं कि शिक्षक को भी हमेशा अपने पेशेवर विकास के प्रति सजग होना चाहिये। एक शिक्षक में आत्मविश्वास का होना बहुत जरुरी है। साथ ही विविध तरीकों का शिक्षण में इस्तेमाल, कक्षा को रोचक और सीखने को सरल बनाता है।

शिक्षा में नवाचारों के लिए उत्सुक इंदु जी से जब उनकी प्रेरणा के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया– हम बहुत बार सही दिशा में कार्य करते हैं लेकिन हमें अपने आपको अपने काम को समझने का नजरिया नहीं होता। इसलिए हम शिक्षकों का आपस में संवाद होना जरूरी है। शुरूआती कक्षाओं के बच्चों के पढ़ने–लिखने के लिए उन्होंने बहुत से नए प्रयोग किये जिसे उन्हें पौड़ी विकास क्षेत्र के शिक्षकों के साथ साझा करने का अवसर मिला, जहाँ इंदु जी ने बखूबी अपने अनुभवों, गतिविधियों को साझा किया। इसे वे अपने आत्मविश्वास के लिए अपने कार्य को समझने का सुनहरा समय मानती हैं। वे अपने विद्यालय के बच्चों की कहानी सुनाने आदि गतिविधियों को फेसबुक पर साझा करती हैं और प्राप्त प्रतिक्रियाओं और टिप्पणियों पर भी गौर करती हैं।

पिछले साल से, इंदु जी, श्रीनगर में संयुक्त चिकित्सालय के सामने झोंपड़ पट्टियों में रहकर लोहे के औजार बनाने वाले परिवारों के बच्चों को अपने विद्यालय मे नामांकन करवा कर पढ़ा रही हैं। पूछने पर उन्होंने बताया कि चूंकि मेरे विद्यालय जाने का भी ये ही मार्ग है अतः यहाँ से गुजरने पर इन बच्चों को अपने माता–पिता के साथ काम में हाथ बँटाते देखकर बुरा लगता था कि पढ़ने लिखने की उम्र में ये पेट के लिए काम करने के लिए मजबूर हैं। इस से व्यथित होकर मैंने निश्चय किया कि इन बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना चाहिये। इस क्रम में सबसे पहले मैंने इनके माता–पिता से बात की। लेकिन बच्चों को स्कूल न भेजने के उनके कई व्यावहारिक तर्क थे। काफी मान–मनोवल और बच्चों की सुरक्षा और पूरा ध्यान रखने आदि का आश्वासन देने के बाद आखिरकार सफलता मिल सकी। फिर बच्चों के आने जाने के लिए सहायक अध्यापिका से विमर्श कर वाहन व्यवस्था की और उनके लिए स्टेशनरी, बैग, ड्रेस आदि का इंतजाम भी खुद के संसाधनों से किया। उन्होंने महसूस किया कि ये बच्चे बहुत प्रतिभाशाली हैं, आवश्यकता है उनको अवसर दिए जाने की।

समुदाय के साथ उनके अच्छे रिश्ते हैं और गाँव के सभी सामाजिक कार्यों में उनको अवश्य ही आमन्त्रण होता है और वे भी समय निकालकर उनमें प्रतिभाग करती हैं। आगे उन्होंने बताया कि कुछ अभिभावकों द्वारा उनसे कहा गया कि वे बच्चों को यदा–कदा डाँटे–पीटें भी। लेकिन उनका स्पष्ट मत है कि डांटने, फटकारने और पिटाई का सीखने से कोई संबंध नहीं है। वो बताती हैं कि वे सभी बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि से व्यक्तिगत रूप से परिचित हैं और मानती हैं कि अधिकांश अभिभावक कई कारणों से अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। उनका मानना है कि प्रत्येक बच्चा

सीख सकता है यद्यपि सीखने की सबकी अपनी अपनी गतियाँ होती हैं। और सबके सीखने के लिए विभिन्न प्रक्रियाओं को अपनाना पड़ता है। इंदु जी बच्चों की बातों को गहनता से सुनती हैं। उनकी बातों को पूरा स्थान देती हैं। विद्यालय जाने पर इस बात की पुष्टि भी हो जाती है। वहां के बच्चे एक बार आपके साथ घुल–मिल जाने के बाद जिस तरह के प्रश्न पूछते हैं, स्पष्ट हो जाता है कि इसके पीछे शिक्षक का कठिन श्रम छुपा है।

इंदु जी को अपने पेशे से प्यार है और अपने दायित्वों का पालन पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ करती हैं। इस बात की पुष्टि अभिभावक और उनको जानने वाले भी करते हैं। विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उनके नवाचारों को खूब सराहना मिलती है। उनके पढ़ाने का पूरा तरीका बाल केंद्रित है और बच्चों को अभिव्यक्ति के पूरे अवसर उनकी कक्षा में मिलते होते हैं। इस बात की पुष्टि सुबह प्रार्थना सभा से लेकर दिन भर की होने वाली विभिन्न गतिविधियों यथा– योग, डिबेट, खेल आदि से हो जाती है। उनकी कक्षाओं में पियर लर्निंग के पूरे मौके उपलब्ध होते हैं। प्रायः कक्षा तीन से पाँच तक के सभी विषयों को वे पढ़ाती हैं। अपने शिक्षण में एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों को आधार बनाती हैं। इसके अलावा वे शिक्षण में वर्कशीटों का इस्तेमाल करती हैं और बच्चों को टी.एल.एम. निर्माण प्रक्रिया में भी शामिल करती हैं। उन्होंने अंग्रेजी में बिग बुक के लिए काफी टी.एल.एम. बनाए हैं। उनकी शिक्षण प्रक्रियाओं में ज्यॉमिति और आकृति के लिए वर्कशीटों के विभिन्न उपयोग भी कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं में देखे जा सकते हैं। इसके अलावा उनका मानना है कि बच्चों के साथ अंग्रेजी भाषा पर मेहनत की जाये तो वे अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त पर्यावरण अध्ययन में भी अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं और इसके लिये वे खूब मेहनत भी करती हैं। वे प्रत्येक बच्चे का लर्निंग स्तर जानती हैं और प्रत्येक बच्चे के लर्निंग स्तर को सुधारने के लिए उनके पास पृथक योजना होती है। इस बात की पुष्टि उनकी डायरी से स्पष्टता होती है। इसके अलावा वे कुछ समय पाठों को फिर से देखने में भी लगाती हैं। इससे उन्हें पता लग जाता है कि बच्चे का प्रदर्शन कहाँ पर संतोषप्रद है और किन जगहों पर कुछ अंतराल रह गये हैं। उनका प्रयास रहता है कि कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं से ऐसे वातावरण को बनाया जाए जो बच्चों को अधिकाधिक प्रश्न पूछने को प्रेरित कर सकें।

''इंदु जी एक मेहनती शिक्षिका हैं और जो भी बेहतरी के लिए उन्हें सलाह दी जाती है वे उसे करने का पूरा प्रयास करती हैं। प्रशिक्षणों से प्राप्त अनुभवों को बच्चों के साथ कक्षा में प्रयुक्त करती हैं, जिसका प्रभाव बच्चों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।''

– जे.पी. काला, बी.ई.ओ, पौड़ी

(इंदु पंवार की गणेश बलोनी व अमरदीप पॉल से हुई बातचीत पर आधारित)